NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

तोरिया, सरसों में रोग एवं कीट प्रबंधन

डॉ प्रदीप कुमार, डॉ सर्वजीत

परिचय:

सरसों रबी मौसम की प्रमुख तिलहनी फसल है, सरसों की फसल में कम सिचाई एवं कम लागत से दूसरी फसलो की अपेक्षा अधिक लाभ होता है I सरसों के बीज में तेल की मात्रा 30-45% तक पायी जाती है इसके बीज का उपयोग मसालो में किया जाता है एवं तेल का उपयोग खाद्य के रूप में किया जाता है I सरसों की पत्तियों को पशुओं को खिलाने, घरों में सलाद एवं साग के रूप में किया जाता है। तोरिया एवं सरसों के महत्वपूर्ण उत्पादक देश भारत, चीन, पाकिस्तान एवं कनाडा हैं। भारत का विश्व के कुल सरसों उत्पादन में 14% योगदान है भारत में सरसों का क्षेत्रफल 9.2 मिलियन हे. एवं उत्पादन 13.2 मिलियन टन है। गुजरात में सरसों की उत्पादकता (1396 किलोग्राम/हे.) सबसे अधिक है भारत में सरसों की खेती मुख्यतः राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, झारखंड में की जाती है। इन राज्यों में राजस्थान में सरसों के अंतर्गत क्षेत्रफल एवं उत्पादन सबसे अधिक है। भारत में कुल सरसों उत्पादन में उत्तर प्रदेश का वर्ष 2023-24 में कुल सरसों उत्पादन में योगदान लगभग 15 लाख टन (14.24%) है।

जलवायु- सरसों की खेती शरद ऋतु में की जाती है इसके लिए मुख्यता शुष्क एवं ठंडी जलवायु (18 -25°°तापमान) की आवश्यकता होती है। सरसों के फसल में फूल आने की अवस्था में बर्षा, अधिक आद्रता एवं बदल छाये रहना फसल के लिए प्रतिकूल होता है I यदि इस प्रकार का मौसम बना रहता है तो माहू/चेपा कीट का अधिक प्रकोप रहता हैI सरसों की खेती के लिए अम्लीय मृदा एवं अधिक वर्षा वाले स्थान उपयुक्त नहीं होते हैं।

कीट नियंत्रण

आरा मक्खी- यह कीट फसल की प्रारंभिक अवस्था में पत्तिओं एवं कोमल शाखाओं को खाता है इसकी गिडारे सरसों कुल की सभी फसलों को हानि पहुंचाती हैं, इसकी सूड़ियां पत्तियों को किनारे से अथवा पत्तियों में छेद कर तेजी से खाती हैं। जिससे पौधे कमजोर हो जाते हैं उनका विकास रुक जाता है जिससे उत्पादन प्रभाबित होता है।

रोकथाम- इसके प्रवंधन के लिए बुवाई के समय नीम की खली खेत में प्रयोग करें, बुवाई से पहले इमिडाक्लोप्रीड या थायोमिथोक्साम 6 मिली/किलो बीज दर से उपचारित करें, फसल की समय पर बुवाई करें कीटों का प्रकोप होने पर क्यूनालफास, 1.5 प्रतिशत धूल 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करेंI इसके अतिरिक्त इमिडाक्लोप्रीड 17.8% SL 250 मिली/है या प्रोफेनोफास 40%+साईपरमेथ्रिन 4% ई सी 1000 मिली/है की दर से छिडकाव करें I खेत की सफाई करे अवशेषों को खेत से बाहर कर दे।

माहू- माहू सरसों की फसल में नुकसान पहुचाने वाला प्रमुख कीट है I यह कीट देर से बोई गई फसल को अधिक आर्थिक नुकसान पहुचाता है इससे उपज में 96% तक कमी हो सकती है माहू सरसों की फसल में

डॉ प्रदीप कुमार, डॉ सर्वजीत
विषय वस्तु विशेषज्ञ फसल सुरक्षा, विषय वस्तु विशेषज्ञ] बीज विज्ञान
कृषि विज्ञान केंद्र| सिद्धार्थनगर| आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौदोगिक विश्व विद्यालय कुमारगंज | अयोध्या & 224229

पत्तिओं कोमल शाखाओं और फलिओं एवं फूलों से रस चूसता है पत्तियां मुरझा जाती है और दाना नहीं बन पाता है। तथा बने हुए दानों में तेल की मात्रा कम हो जाती है I ये कीट फफूद जनित रोग फ़ैलाने का कार्य भी करते हैं इसका प्रकोप दिसंबर से प्रारंभ होता है मौसम नम होने पर इसका प्रकोप अधिक होता है।

नियंत्रण- समय पर फसल की बुवाई उचित पोषण समुचित रोग एवं कीट प्रबंधन से फसल सुरक्षित रहती है एवं बेहतर उपज प्राप्त होती है क्लोरोपायरीफास् 20 ई सी 500 मिली लीटर/है, थायोमिथोक्साम 25%WG 100 ग्राम/है या डाईमिथोएट 1 मिली/लीटर घोल या मिथाइल पैराथियान 2% धूल 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए।

बिहार की रोमिल सूडी-बालदार सूडी काले या नारंगी रंग की होती है, तथा पूरा शरीर बालों से ढका रहता है यह सूड़ियां झुंड में रहकर पत्तों को खाती हैं अधिक प्रकोप होने पर पौधा पत्ती विहीन हो जाता हैI इसके नियंत्रण के लिए क्यूनालफास, 25% ईसी की 1.25 लीटर प्रति हेक्टेयर कीदर से 600 से 750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

चित्रित बग- यह धब्बे दार कीट होते हैं। जिनके शिशु एवं वयस्क पत्तियों मुलायम शाखाओं तनो फूलों एवं फलियों का रस चूसते हैं। प्रभावित पत्तियों के किनारे का भाग सूख जाता है प्रभावित फलियों में दाने कम बनते हैं। इनके नियंत्रण के लिए क्लोरोपायरीफास् 20% ईसी के 1.0 लीटर अथवा मोनोक्रोटोफॉस 36% एस एल की 500 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से या क्लोर एन्ट्रानिलीप्रोल 10%+लैम्ब्डासाइहैलोथ्रिन 5% जेड सी 0.5 मिली/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

रोग प्रवंधन -

सफ़ेद रतुवा- इस रोग में पत्तियों पर सफ़ेद पाउडर जैसे धब्बे/फफोले बनते हैं रोग बढ़ने पर फफोले आपस में मिलकर अनियमित आकार के हो जाते है जिससे पत्तियां पीली होकर सूख जाती हैं और कुछ पत्तियां मुड़ जाती हैं और अंत में गिर जाती हैं यह लक्षण- पौधों के पत्तों, टहनियों, तना, फूलों एवं फलियों पर पाया जाता है।

प्रवंधन- फसल की समय पर बुवाई करें (15-25 अक्टूबर) फसल चक्र का प्रयोग करें, फसल अवशेषों को नष्ट कर दे, रोग मुक्त बीजों का प्रयोग करें एवं बुवाई से पहले मेटालेक्जिल 6 ग्राम प्रति किलो बीज दर से उपचारित करें खड़ी फसल में रोग का प्रकोप होने पर मेटालेक्सिल 8%+मैन्कोजेब 64% @ 2.5 ग्राम/लीटर,हेक्साकोनाजोल 5% एस सी 2 मिली/लीटरपानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करें। एवं 15 -20 दिन के अन्तराल पर पुनःछिडकाव करे।

झुलसा/काला धब्बा रोग- इस रोग में पत्तियों पर छोटे गहरे भूरे काले धब्बे बन जाते है I ये धब्बे आपस में मिलकर बड़े धब्बे बना लेते हैं और पत्तिओं को झुलसा देते हैं रोग के बढ़ने पर ये धब्बे तने शाखाओं एवं फलिओं पर फ़ैल जाते हैं I फलिओं पर धब्बे गोल एवं तने पर लम्बे होते हैं रोग ग्रसित फलिओं में दाने सिकुड़े हुए एवं छोटे आकार के हो जाते है होते हैं।

प्रवंधन- फसल की बुवाई के लिए रोग मुक्त एवं फफुद्राशी जैसे मैन्कोजेब 3 ग्राम/किलो या कारवेंडाजिम 50% WP 2 ग्राम/किलो की दर से उपचारित बीजों का प्रयोग करें I रोग का प्रकोप होने पर मैन्कोजेब 2.5 ग्राम/लीटर की दर से पानी में घोल बना कर 10-15 दिन पर 2-3 छिडकाव करें।

तना गलन रोग- यह रोग मिटटी में अधिक नमी होने की दशा में उत्पन्न होता है इस रोग में पौधों का तना

प्रभावित होता है तने के निचले हिस्से में सडन एवं सफ़ेद फफूदी धब्बे दिखाई पड़ते हैं और यह सडन पूरे तने पर फ़ैल जाती है I प्रभावित पौधों की पत्तियां पीली होकर मुरझाने लगती हैं I रोग अधिक होने पर फसल गिर जाती है।

प्रवंधन- फसल की बुवाई के लिए रोग मुक्त एवं उपचारित बीजों का प्रयोग करें फसल की हल्की सिचाई करे रोग का प्रकोप होने पर थायोफिनेट मिथाइल 70% WP 2 ग्राम प्रति ली या कारवेंडाजिम 50% WP 2 ग्राम/ली पानी की दर घोल बनाकर छिडकाव करें।